मुमितसागर जीमहाराज की दीक्षा तथा और भी कई दीक्षाय हुई सगभग ५०-६० चौके सगते थे चर्णा का दृश्य बगा ही अनुषम था। नमोग्तु नमीग्तु शब्दों से सारा शहर गुःजायमान हो जाता था। इस चातु मिस कमें शे के मंत्री का भार भी आप को दिया गया आपने परिधम पूर्वक संघ की वैयावृत्ति की तथा व्यवस्था की जिससे चातुनीस सफलता पूर्वक सम्मन हुआ।

चातुर्भास सम्पन्न होने के परचात आचार्य महाराज ने पंच फत्याणक प्रतिग्ठा के लिए सेठ मूल चन्दजो का ध्यान आकंषित किया जिसके फलस्हप पच कत्याणक प्रतिष्ठा कराया जाना निश्चय हुआ।

पंच कल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

सेठ साहेब के सानिष्य में पंच कल्याणक प्रतिष्ठा कमेटी का चुनाव हुआ जिसके मंत्री भी आप ही चुने गये। महोत्सव सं २००८ वंशाल धुवल पंचमी से नवमी तक विशाल पंमाने पर हुआ आपने लगगभ दस माह रात दिन अधिक परिश्रम कर महोत्सव में सफलता प्राप्त की।

महोत्सव में लगभग ५० हजार जनताका एकत्रित होना तथा खंडेलवाल महासभा का अधिवे शन होने से उत्सव में चार चांद लग गये।

वैसे तो महोत्सव में नल, विजली, तार, टेली-फोन आदि को तो ध्यवस्था यी ही किन्तु, महोत्सव के स्थान पर ही हर समय रेलवे टिकट मिलने से यात्रियों को बड़ी सुविधा रही अस्तु सभी ने इस क्यवस्था की बड़ी प्रशंसा की।

जैन पंचायत

आप स्थानीय पंचायत का कार्य लगभग ४० वर्ष से मन्त्री पद पर रहकर धार्मिक एवम् सामाजिक सेवार्ये करते आ रहे हैं। किन्तु वृद्धावस्था तथा अस्व स्थता के कारण कुछ समय से आपको इस सेवा से मुक्त होना पड़ा।

दुस्य करेशी

करि प्रशिद्धक करे करि महावक्ता के जिला कर पुरस् कार कि के क्रिकेट के एउट कार्य है निर्धार मेंद सही जिला के बादक साहत होंद्र कुछ करन कर्याहित के सही जिला के एक क्रिकेट का इस के क्रांकी किया सहाम क्रिकेट कर करि क्रिकेट संक्रांक हुए हैं चित्र क्रिकेट करि की क्रिकेट संक्रांक हुए के प्रकृति हैं, जाते की क्रिकेट क्रांकी की स्थानकार की तेले के क्रांका जिल्हा कुछ क्रिकेट हैं।

. को सहित्रसागर क्षीनवासव

" तत्त्वार्थसूत्र - कर्तारम्-उमास्वामि मुनीश्वरम्। श्रुतकेवलि -- देशीयं-वन्देऽहं गुण - मन्दिरम् ॥" - मैसूर नगरताल्लुक-शिलालेख न० ४६

कर्गित् के विवास काले एका राम्युर्वात सहस्य सम्पन्धांत करावात है । बीतकार सम्पन्धांत साम विवास का होड़ा है ।

मध्यम्भेत भी एत्स्स भेते भीति है है

तन्त्रिमादिधिगमाहा ॥३॥

सम्बद्धांन निसर्व धर्यात जिल्ल स्थापत से परीप्रयोग के विना तथा अधिनय अर्थात यह के उपनेत में, साहत ध्याप में अर्थात इस की प्रकारों से अपना होता हैं।

कुरूद कोश कोश से शे हैं

जीवाजीयाराययन्धसंयरनिजेंदा

मोक्षास्तत्त्वम् ॥४॥

जीव, अभाव, आसव, बन्य, शंवर निर्द्धरा और मोश वे मात सन्द हैं।

मन्मप्रतेन संघा संघी की कीन जाना जाता है?

(तर्रेश, श्याधिक, साधक, अर्थक्षण्या, रियाँत और विधास कृष्टे द्वारत की कोवर्धद सन्द समा सादादानि-क्राम-व्यक्ति का कान होत्रा है । (यह सा अनुवीय क्रम्पाँव है)

कृत भय पहलेगां ८ इस्त की क्षत्र सेला है -मरमंस्याक्षेत्र स्पर्गन कालान्तर भावास्प बहुर्वश्च ॥=॥

सन् (Exptense) संन्या, क्षेत्र, स्वर्धन, काम, सन्तर (विरम्भाम) याव और प्रस्पदगुष्ट (Quantity) सामके इन आठ समुगोपी से भी कीवादि सखीं आदि का काम शेमा है।

शन के रिकी केंद्र हैं — मतिश्रुतार्याधमनःपर्ययकेंद्रकानि ज्ञानम् ॥२॥

मितितान, भूततान, श्रविमान, बनः पर्वय

क्राप्त अवस्थितिकोता क्षेत्र अभैन्तर क्षित्रे वेद्यान वेद्याचे । अनुस्कर् व्यवस्था क्षेत्रीय क्षेत्र स्थ

松下中的 有 大致 有比多 阿押 经气管

मनिः स्मृतिः मारा भिन्ताः निविद्योग

पुरवनविद्युतम् ११९३।।

कांन, क्यूरिय, समय, ईक्टमार, व्यक्तियकीय इत्यारीड व्यक्तिस्थास्य के कृत्या नाम है क

therman has the time became and

त्तरिन्द्रयानिन्द्रियनिमस्य स्वाप्तः सह गोन्हात गोत्र द्वीरण कीर गत की सरायमाने होता है।

सरित्रपुर्व के दूरपुर संस् हैंकर है है

- अवप्रवृष्ट्रावायपार्णाः ॥१४॥ मन्त्रितः के जनप्र (मामान सम्भोक्त).

arm f & have

गुणित करने पर (४०%६ = २००) मतिमात के २०० भेद होते हैं।

अर्थस्य ॥१७॥

कदर कहे गये गतिसान के भेट सर्घ के हीते हैं। (स्थिर और स्पूल कम्यु को अर्थ यानी पदार्थ काते हैं।)

मितिशान के सम्बन्ध में और भी धनाते हैं-स्यञ्जनस्यायग्रहः ॥१८॥

ध्यप्रस्त परार्थ (अर्थात अध्यक्त अप्रयट रय प्रस्वादि परायों का) अवग्रह भाग होता है। (ईहा आवाद, और पाश्या रूप मान नहीं होते) यह अवप्रह भी १२ भेटों सहित स्थु और मन को स्त्रोड़ भेष सार इन्डियों से ही होता है इस प्रकार स्वयन्त अवप्रह मतिसान के १ ४ १२ % ४ = ४८ भेट होते हैं। पिद्धते २ = भेटों को जोड़ने पर

रत रोतो में क्या अल्पर है है विशुद्धधप्रतिपाताच्यां तद्विशेषः ॥२४॥

विशुद्धि (आसमा के परिणामों को निर्मातता) श्रीर अमृतिपात (संयम में पतिन न होने के कारण) को अपेसा ऋष्टुमतों से विशुत्तमनों में विशेषता है।

प्रवर्षि और मन.गवेद मान में बना जनार है ? विशुद्धिक्षेत्रस्वामिनिषयेस्योऽवधिमनः पर्यययोः ॥२५॥

स्विष और मनःष्यंय ज्ञान में विगुद्धि, होत्र, स्वामी और विषय की अपेशा अन्तर है। (अवधिज्ञान से मनःपर्यय ज्ञान विगुद्ध है। लेकिन अवधिज्ञान का रोज अधिक है। मनःपर्ययज्ञान के स्वामी विशिष्ट शंयम वाल मनुष्य ही होते हैं। अवधिज्ञान कारों हो गतियाँ में होता है)



धीपगमिक माय के यो मेर-

सम्बद्धचारिहो ॥३॥

औपशिषय सम्बन्ध और औपशिमक चारित्र मे भी सीपशिमक भाव हैं।

क्षाविक माय के भी मेद हैं —

ज्ञानदर्शनदानलाभभोगोपभोगवीर्याण

च ॥४॥

झान, दर्शन, वान, लाभ, भीग उपभोग, बीवँ तया सम्बद्धत्व और चारित्र ये नी झाविक भाव के भेव हैं।

क्षायोपनिषय (मिश्र) नाव के अठारह मेर — ज्ञानाज्ञानदर्शनलब्धयश्चतुहित्रत्रिपञ्च भोदाः सम्यक्त्वचारित्रसंयमासंय-मारच ॥५॥

11थिए।। मुफ्रक् क्र फ्रिक्मपुर्कु हुनी (फर्म्स कि सम्बूष्ट्र हो प्रामाध) स्त्रीकृति मित्र । है तिष्ठक प्रज्ञीखद कि एउम्पट प्रम कि कि मिर्म के क्षाक्र प्रश्निक्त के मध्य

11.2P11 मार्डानिभा गिरिएट्टउन जन्म (मोग कि रिज णहुए एस) प्रवेत १ हे हिक प्रद्यागित प्रांतिक

नांव शहरतां के नाम बया है— १९४१ विक्रियों के नाम है स्पर्यंत, रसमा, प्राण, भाष समित्रों के नाम है समित समा, प्राण,

बसे गोर शोत्र।

- मन्द्रेष्ट । १ महर्षिति

12 2h

सव दश्यों के विषय स्तात है— स्पर्शेरसगरम्बण्याद्वस्तद्यीः ॥२०॥

न्त्राक्षः व कार एक्सेक्स् सिन्धाः सम्बन्धाः सिन्धाः

ा है तारू हुन विके गति विक्रिय होता हम भदि स्थित सम्म में व्हेंग्य स्म्य —विश्वजी प्रियमित विविद्यालय । है सिस्थ्य विक्रिय । है सिद्ध विषये श्रीप्त व्हिस्त विव्यव्य

मित्रह में शिक्ष से से प्रतित हैं। किसे हैं। इसे हैं सिंग हैं सिंग हैं सिंग हैं

विषर्गता कमयोगः ॥२५॥

हें एप्राम गाँव वाक एमांक में लीग्द्रपटी रिसट्ट में लीग क्य प्रांत में गाँव प्योगक लीगक 1 हे 157क समग में लीग

hith (and tive) mer in fein fallife jik ti. nen leibbinte karkeit meglyti R Hell

that will be the property of the 1 % things getting at 47 ft godi attic in that is the arise and a fine in male and the stage of a call field and a malbin agn megnit bagair andarif

THE SECTION OF THE PARTY OF THE (बंबर्स) से के लेक के के वा बहुत शर्मन भोनत

noen uklikienene je ud inde alk a kereken er ala dar

1 & 1 au 22 , 2 (2 killer, 12 8 2

tig tinde and even to signifize frith र्षक्ष संबंधात्रकात्रा ॥०५॥ ·森默斯 多名 本北部 新进车 山北京

नहीं पृक्षि किया सम्बन्धित स्था हो। विक्रिक्ष स्था है। विक्रिक्ष स्था है।

ें है गिड़ केंसको मन्त शाम

११४६।। :झाम्प्रमाणाकुपान्ह

। है 161ड़िक्स जायग्रेट के सिक्शियत प्रोध कर -प्रच कियात । है दिहि स्माग्रेट से स्पर्ध जायग्रेट र । है रियम क्रिक होते प्रीध कि किति से सिक्ष जा

म्हन्यन जन्म सिस्सुन्यम् ।।३४।। ग्रेवावार्षे सस्सुन्यम् ।।३४।।

करोतिक में जिल्ला करण है। करोतिक में जिल्ला करण हो। के विश्वित करण होने के विश्व करण

-हें होड़ के प्राक्ष में हकी प्रीत

भाक्षमत्त्रकते अस्त्राहा कार्यक्षेत्र स्वाप्त । । इहा। व्याप्त स्वाप्त स्वाप्त । । इहा।

स्य सद जीवी के शहर अरिश कि एस मह

। है एर्ड्स एए ताएएंस्ट में र्नाय एस्ट्रेस

अनत्त्रमुणे पर्र ।। इ.६।।

ហើយទ ក្សិន មួយតិ តាំស្នង កូស្សា វ៉ុន គឺ តិការ ឯកស្វេរនេ តាំស្នង ត្វី ត្វី ត្វី តាំង បានក្យា ចំព្រះការ រ ថ្វី តិវ៉ែន ភេនិន ចំពូកការន មី កូស្វែន អូឌត់ អ៊ី កូវិវិធ —ក្រព្តវិធី ត្រៃ ភូវិភេ ខៅមាល កូនៃ អ្នកតិ

॥०४॥ माम्राह्म

कि प्रोप्त हु सिंदि वे लोमक प्रीर सहते क्रियेष्ट कि म के सीक्ष्य है सड़ीप्रतायतीर स्त्रेष्ट । है वित्र प्रिक्षिति स्वार्थित है स्विष्ट विश्वेष्ट

— स्वस्य में ग्रियाश कि लोमक प्रीरं सक्ते ।।१४।। क्रिक्टिक्स्क्री।क्रिं

मास के मनाह अग्रिय व्योमास अभि सटके हिएउ प्रस्पन्त से स्वत्व श्रीक्ति (प्रश्रेष्ट कि सीस्पन) 1 हे स्रिष्ट

सर्वस्य ॥४३॥

then the piet

वीक्षीय प्रशेष हेट हैं। औषपादिक वेशिक्षीय किस्सा १४६॥ विश्व केर स्थाप स प्राप्त होते को को विश्व केर सोवा प्रश्निक केर्न को को का

deline nin shusenit k win ledu stri shus shusenit k win ledu shusenit shusenit k

॥=४। शिममहर्क

कं भीक्र सोक्षा कं स्पष्ट कि मोक्स करने 1 है क्षाद्र के स्पष्ट में समीने

Ho Lii :156 153] 10fe i g éig mil ig nin o' li ile pie

समान मर्ग सम्मन् नक्ष सामान्य । भीषपादिक्त्वरमोत्तमदेहाऽसंस्प्रेषवर्षा

ग्रह्माः :प्रशुक्तः ।। इ द्वाः

(शिराक रहें, करें) ज़िक्र केंग्र कर जाकर विवाधार के काइन कोइस्) जीव प्रशिष्ठ मक्तियन ज़िक्र पुष्ट कि प्रेष्ठ मास्यक्ति (क्ट्रेस्टर प्रक्रिंगी) ज़ावक [कि विवोध क्षेत्र क्षेत्र केंग्रि

ा विद्यों कुछ हो है। एक प्राप्त देश किया हो किया हो है। एक स्वाप्त हो कि है। एक स्वाप्त हो कि है। एक स्वाप्त हो कि हो है। एक स्वाप्त ह

इनार आंग संस्थामि विरचते मोध शास्त्र हिन्दी

tig rove û Îves 33,1 Ş û sive 9 û sê nolgu ve avoù v ve sik rovlou ve tiv Kiv kig rove û Îvurd yaye vie sik 1 Ş kirşv kikiva ve

—ई छं मक गक्ती लीकती कि किमिनी П⊐ри त्रीकृष्टेक्

। है प्रमृद्ध प्रमृद्ध :समृद्ध माम्रोगी से छिटे मह

है कि मह के किस्से हैं मिसम्बाद्धित मान्द्रितासाम्मिस्स मिसम्बाद्धित मिस्स्स् गुरुम्प्रिकानिकान्निक्स्स् गुरुम्प्रिकानिकार् भी वेस्त्रिक्स्स् मिस्स् प्रतियोग्निक्स्स् मिस्स् भीवास्स्

1128 में 1128 में 1128में स्वापन माहेन, असु-अस्में स्वीयमं-प्रशान, सम्बन्धान, मुक-महायुक, मताय-मन्त्र उन्ति महिल्ला, स्वापन महिल्ला, प्रमानिक क्षेत्र प्रशास होता है।

and added the ball and the

होती है। मान को कारी के जीवने किया में बहुत है। सब के किसी के जीवने किया है। सब जिन्हों के

responde a fine force es qui pres prin ann prince an bor à faire e firir ens pe fine e poi en évil susting perific présen per e e téré errelisere à ferel à pe

स्थापन या च नायह है है है । स्थापन या च नायह है है है ।

i i min tech

(अजीव तरव का वर्णत)

सहवारिया ।। या किए विषयिक जीविक वस्त वहने द्वित क विकास है। (काल देखें की स्वीप स पुरास दे चारों अजीय (बेतन रहिते) है है ।(है मान के रिकड़ में) संवर्ध सेम

विकायायमाध्यमाना व्याप्ति।

¿ & lbe E

वाद्वाचा । इस તમ' ત્રતમું ગાણત્ર ગાંહ તેનાલ ૧૩૯

Pro 82 1 & 1m more mer de 190 मांच ना लंक राज १ । भार तीर अ

B kin die Rinie Gere der d

19 33 103 31000 10 10 2 170 4 4

1 20 H 4 30 H 400 1 2 15 25 30 7